

भाषा की बात

01. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखें-

झाग, पिलसन, शायत, चरित्तर, विदवान, समुंदर, मुलक, फिकर।

शब्द	शुद्ध रूप	शब्द	शुद्ध रूप
झाग	झाग	पिलसन	पेंशन
शायन	शायद	ब्रम्मा	बर्मा
चरित्तर	चरित्र	विदवान	विद्वान
समुंदर	समुद्र		

02. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाएँ-

मलीन, कमाई, पुल, छत्रछाया, प्रबंध, आदर्श।

उत्तर: मलीन	उसका कपड़ा मलीन है।
कमाई	अब नेताओं की कमाई अच्छी हो गयी है।
पुल	पुल बड़ा है।
छत्रछाया	आपकी छत्रछाया में मैं रहना रहता हूँ
प्रबंध	इस अस्पताल का प्रबंध बहुत अच्छा है।
आदर्श	गाँधीजी एक आदर्श पुरुष थे।

03. रेखांकित उपवाक्यों को बताएँ-

(क) सुल्तान घोड़े से उतरा और तलवार से उसने एक विशाल विटप के तने पर आघात किया।

(ख) उसके गिरते ही बिजली सी दौड़ गई उसके सैनिकों में, और हजारों तलवारें घने वन के वृक्षों पर टूट पड़ी।

(ग) वे लगभग एक साल रहे और फिर अंग्रेज सरकार ने उन्हें जिले से निर्वासित कर दिया।

उत्तर: (क) सुल्तान घोड़े से उतरा-संज्ञा उपवाक्य।

(ख) उसके गिरते ही बिजली सी दौड़ गई-क्रियाविशेषण उपवाक्य

(ग) वे लगभग एक साल रह-क्रियाविशेषण उपवाक्य।

04. अर्थ की दृष्टि से निम्नलिखित वाक्यों की प्रकृति बताएँ-

(क) क्या पता है ये ब्रम्मा से आई हैं या कहाँ से आई हैं?

(ख) दिनों का कोई हिसाब नहीं है, माँजी।

(ग) उसके कड़ों के मोती तारों की तरह चमकते हैं।

(घ) तू ऐसा क्यों हो रहा है, बेटे ?

उत्तर: (क) प्रश्नवाचक वाक्य (ख) संदेहवाचक वाक्य

(ग) विधानवाचक वाक्य (घ) प्रश्नवाचक वाक्य

05. रेखांकित अंश किस पदबंध के उदाहरण हैं?

- (क) यह दिल का बहुत भोला है।
- (ख) यह तो मरता हुआ कबूतर भी नहीं देख सकता ।
- (ग) क्यों री, डाक वाली गाड़ी ही थी ?
- (घ) हमारे घर की हालत बहुत खराब है।
- (ङ) तू इसकी आँखों का रंग पहचानती।

उत्तर: (क) विशेषण पदबंध (ख) संज्ञा पदबंध
(ग) संज्ञा पदबंध (घ) सर्वनाम पदबंध
(ङ) संज्ञा पदबंध

06. रचना की दृष्टि से निम्नलिखित वाक्यों की प्रकृति बताएँ-

- (क) चाचा ने खाल उतारना शुरू किया।
- (ख) उस रोज मैंने चाचा से बहुत कहा लेकिन वे नहीं माने।
- (ग) जैसे-जैसे खाल उतर रही थी, मेरे भीतर रक्त जम रहा था।
- (घ) जाते ही हेडमास्टर ने फिर झाडू के काम पर लगा दिया।
- (ङ) एक त्यागी लड़के ने चिल्लाकर कहा, मास्साब वो बैठा है कोने में।

उत्तर: (क) सरल वाक्य (ख) मिश्र वाक्य
(ग) मिश्र वाक्य (घ) मिश्र वाक्य
(ङ) संयुक्त वाक्य

07. रचना की दृष्टि से निम्नलिखित वाक्यों की प्रकृति बताएँ एवं संयुक्त वाक्य को सरल वाक्य में बदलें-

- (क) कविता पर समाज का दबाव तीव्रता से महसूस किया जा रहा है
- (ख) यह परिवर्तन न बहुत बड़ा है, न क्रांतिकारी।
- (ग) मुक्तिबोध ने सिर्फ लंबी कविताएँ ही नहीं लिखी हैं।
- (घ) आलोचकों की दृष्टि में सच्चे अर्थों में प्रगीतात्मकता का आरंभ यही है, जिसका आधार है समाज के विरुद्ध व्यक्ति।
- (ङ) पिछले पाँच-छह वर्षों से हिंदी कविता के वातावरण में फिर कुछ परिवर्तन के लक्षण दिखाई पड़ रहे हैं।

उत्तर: (क) सरल वाक्य (ख) मिश्र वाक्य
(ग) सरल वाक्य (घ) संयुक्त वाक्य

सरल वाक्य में रूपांतरण- आलोचकों की दृष्टि में समाज के विरुद्ध व्यक्ति सच्चे अर्थों में प्रगीतात्मकता का आरंभ है।

(ङ) सरल वाक्य।

COHERENT ENGLISH CLASSES-9065829862 **Page # 141**

08. नीचे लिखे वाक्यों से सरल, मिश्र एवं संयुक्त वाक्यों को छाँटे-

- (क) हर आदमी उस संसार को रचता है जिसमें वह जीता है और भोगता है।
 (ख) आदमी यथार्थ को जीता ही नहीं, यथार्थ को रचता भी है।
 (ग) सुबह से ही पेड़ काटे जा रहे हैं।
 (घ) कल शाम से रोज इसी समय तक बहुत प्यारी भी गंध हवा में उड़कर मेरे दरबाजे तक आती है।

उत्तर: (क) संयुक्त वाक्य (ख) मिश्र वाक्य

(ग) सरल वाक्य

09. अर्थ की दृष्टि से निम्नलिखित वाक्यों की प्रकृति बताएँ।

- (क) मौसम एकदम से ठंडा हो गया है।
 (ख) हवाओं में ये कैसी महक है ?
 (ग) आज भी कोई चिट्ठी नहीं।
 (घ) तबियत किस कदर बेजार हो उठी है।
 (ङ) सुरक्षा डायरी में भी नहीं।
 (च) मेरे भीतर इन दिनों कितने शब्द भरे पड़े हैं, या अर्थ ?

उत्तर: (क) विधानवाचक (ख) प्रश्नवाचक (ग) संदेहवाचक
 (घ) संदेहवाचक (ङ) निषेधात्मक (च) प्रश्नवाचक

10. निम्नलिखित शब्दों के मानक रूप लिखें, जैसे- तिरसूल का त्रिशूल।

शब्द	मानक रूप	शब्द	मानक रूप
नैन	नयन	दरपन	दर्पण
निरमल	निर्मल	पानि	पानी
नखत	नक्षत्र	पेम	प्रेम
रकत	रक्त	कीरति	कीर्ति
पुरुख	पुरुष	धरनी	धरती
गो	गाय	कँवल	कमल
बिधु	विधु	स्याम	श्याम
प्रकास	प्रकाश	बनराई	वनराही

12. नीचे दिए गए वाक्यों में अव्यय चुनें-

- (क) अब के नीचे जाएँगे तो चारपाइयाँ ले आएँगे।
 (ख) एक बार तो उठकर बैठ भी गया था, पर तुरंत ही लेट गया।
 (ग) टिट्टी मालती के लेटे हुए शरीर से चिपट कर चुप हो गया था, यद्यपि कभी एक-आध सिसकी उसके छोटे से शरीर को हिला देती थी।

उत्तर: (क) तो (ख) तो, पर (ग) यद्यपि